SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ी काव्य में रसाभिव्यक्ति

मनुस्मृति जगत, शोधार्थी, **अनुसुइया अग्रवाल,** डी.लिट्, शोध निर्देशक, हिंदी विभाग
शासकीय महाप्रभु वल्लभाचार्य स्नात्कोत्तर स्वामी आत्मानंद शासकीय अंग्रेजी माध्यम महाविद्यालय
महासमुंद, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
मनुस्मृति जगत, शोधार्थी
अनुसुइया अग्रवाल, डी.लिट्
E-mail : jagritijagt25@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/02/2026
Revised on : 06/04/2026
Accepted on : 15/04/2026
Overall Similarity : 07% on 07/04/2026

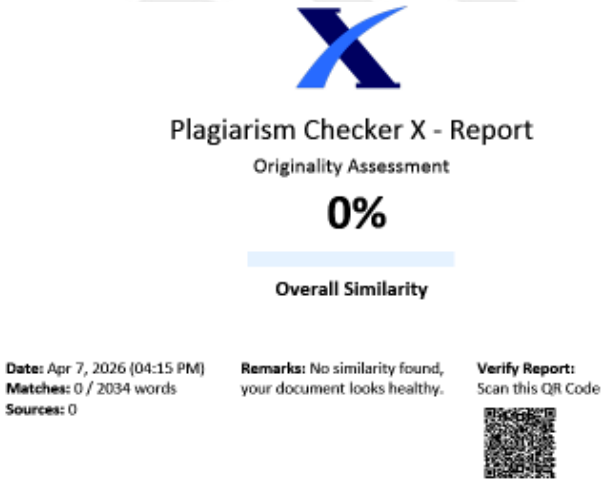

शोध सार

भारतीय काव्यशास्त्र में रसों का स्थान सर्वोपरि है। रस ही वह तत्व है जो काव्य को प्राणत्व प्रदान करता है। आचार्य भरतमुनी से लेकर आधुनिक आचार्यो ने रस को काव्य का आत्मतत्व माना है। मानवीय संवेदनाओं में रसों के ब्रम्हबीज निहित होते हैं। कवि अपने भावाभिव्यक्ति में किसी रस को लक्ष्य करके कोई सृजन नही करता अपितु समसमायिक घटनाक्रम ही रसों को जन्म देती है। रसों की निष्पत्ति लोकपरंपरा तथा लोकाचार की समसमायिक भावों से होती है। लोकसंस्कृति में काव्य एवं परंपरा मनुष्य के प्रारंभिक जीवन से प्रतिछाया की तरह आज भी साथ चल रही है। ऐसे ही अपनी प्राचीन संस्कृति, परंपरा एवं साहित्यिक क्षेत्रों से परिपूर्ण छत्तीसगढ़ प्रदेश के साहित्यकारों ने अपने काव्यकृतियों में रसाभिव्यक्ति से काव्य को सुंदर एवं सहज बनाया है। लोकभाषा में रचे काव्य में रस, परंपरा, लोकजीवन, लोकसाहित्य, प्रकृति प्रेम एवं धार्मिक आस्थाओं के केन्द्र में रस का स्थान महत्वपूर्ण है, जो लोकसाहित्य को पूर्णता प्रदान करती है।

मुख्य शब्द

रस, लोकसाहित्य, काव्य, छत्तीसगढ़ी काव्य, रसाभिव्यक्ति.

छत्तीसगढ़ी भाषा अपनी समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा एवं लोकसंवेदनाओं के लिए जानी जाती है। इस भाषा में रचित काव्यसाहित्य न केवल लोकजीवन का प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है बल्कि उसमें भावों की विविधता भी देखने को मिलती है। भारतीय काव्यशास्त्र में रस को काव्य की आत्मा कहा गया है। रस सम्प्रदाय के प्रवर्तक भरतमुनि के अनुसार ''जिस प्रकार अनेक प्रकार के व्यंजनों से युक्त अन्न भोग करते हुए स्वस्थ पुरूष आनंद की प्राप्ति करते हैं उसी प्रकार विभाव, अनुभाव, संचारी भावों से सम्पन्न स्थायी भावों का आस्वादन करते हुए सहृदयजन रस का आनंद लेते हैं।''[1] भरतमुनि से लेकर आचार्य मम्मट ,भट्टलोल्लट, शंकुक, भट्टनायक, आचार्य अभिनवगुप्त आदि आचार्यो ने रस को काव्य को हृदयस्थल भाव के रूप में स्वीकार किया तथा इसके परिप्रेक्ष्य में अपना अपना मत दिया।

''भट्टनायक ने प्रेक्षक या दर्शक में रस की स्थिति सिद्ध की है एवं आचार्य अभिनव गुप्त के अनुसार प्रत्येक प्रेक्षक पाठक में प्रेम, शोक, क्रोध आदि भाव संस्कार या वासना रूप में सदा विद्यमान रहते हैं, विभावादि को देखकर ये भाव जागृत हो जाते हैं।''[2] इसी परिप्रेक्ष्य में छत्तीसगढ़ी काव्य में श्रृंगार, करूण, वीर, हास्य, शांत आदि रसों की अभिव्यक्ति पाठकों एवं श्रोताओं को प्रभावित करती है। चाहे पण्डवानी जैसी कथा हो, काव्य हो या ददरिया, भोजली एवं सुआ गीत जैसे लोकगीत, इन सब में रस की अभिव्यक्ति अत्यंत प्रभावशाली ढंग से की गई है। छत्तीसगढ़ी लोककाव्य जनमानस की भावनाओं को समृद्ध करता है एवं काव्य की रसात्मकता को जीवंत बनाए रखता है। छत्तीसगढ़ की लोकपरंपराओं में प्रेम,विरह एवं सौंदर्य भावनाओं का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। छत्तीसगढ़ी साहित्य में श्रृंगार रस का विशेष स्थान रहा है। श्रृंगार रस को रसों का राजा कहा गया है। यहां के अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में श्रृंगार रस का प्रयोग बहुतायत रूप में किया है। इन्ही साहित्यकारों में है, नारायण लाल परमार, जिनकी रचनाएं श्रृंगार रस प्रधान होती है। इनकी एक रचना दृष्टव्य है, जिनमें नायक की भावनाएं स्वभाविक रूप से व्यक्त हुई है:

सुन्ना म तोर आंखी के काजर ह महमहावे सुक्खा पाना पैरी के तोर आरो ला सुनावे कइसन कर डारैव मैं देखत देखत हारैव मैं मन खोजे बसै कहां मरम के भोर चारेच पहर बनी करिन देखत रात पहागे नवा जनम धरेंव संगी तइसे मोला लागे चुकता धन पायेव मैं अपन ला सहरायेव मैं बने रहय तोर मया के झानिच टूटय डोर ।।[3]

कवि ने नायिका के सौंदर्य का चित्रण अत्यंत सरस एवं प्रभावी तथापि वर्णन अतिशयोक्ति पूर्ण है। नायिका के आंखों में लगे काजल की महक को कवि ने सुगंधित हवा की तरह महसूस किया है। उसके पैरों में बंधी पायल की आवाज सूखे पत्तों पर भी गूंजती है,जो नायक के हृदय में गहरी हलचल पैदा करती है। नायक का मन नायिका को देखते – देखते खो जाता है और वह अपने भीतर प्रेम की तलाश करने लग जाता है। दिन–रात एक करते हुए बस उसी के सौंदर्य और स्मृति में डूबा रहता है।

छत्तीसगढ़ी साहित्य में श्रृंगार रस के पश्चात् महत्वपूर्ण स्थान रखने वाला दूसरा रस वीर रस है। जहां श्रृंगार रस का सृजन प्रेम, युद्धरहित एवं प्रकृति की गोद में पल्लवित होता है,वही वीर रस अशांत एवं युद्धकाल जैसी स्थितियों में उत्पन्न होता है। छत्तीसगढ़ के अनेक वीरों ने देश के स्वतंत्रता के खातिर अपने प्राणों की आहुति दी है। इनके वीरत्व से प्रभावित कवियों ने अपने काव्य में वीर रस को विशेष महत्व दिया है। छत्तीसगढ़ में पं. सुंदरलाल शर्मा जैसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी हुए जिन्होने आजादी की लड़ाई के साथ साथ साहित्य के क्षेत्र में अपनी लेखनी चलाई है। ऐसे ही साहित्यकारो में कवि केयूर भूषण का नाम विशेष उल्लेखनीय है,जिनके काव्य छत्तीसगढ़ के वीरता पूर्ण अतित का जीवंत प्रस्तुत करती है।

कांप उठिस फिरंगी सेना कोपिन जब नर,नारी बाल। मातृभूमि के मुकती खातिर तज दिन राज पाठ अउ माल। मूड़ कटा लिन माता खातिर दे दिन अपन रक्त के दान। तन मान धन सरबस दे के रखिन छत्तीसगढ़ के शान।[4]

छत्तीसगढ़ में स्वतंत्रता आंदोलन का वर्णन करते हुए कवि ने कहा कि अंग्रेज सैनिक भारतीयों के प्रतिरोध के कारण कांपने लगे हैं। अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए राजाओं ने अपने राज्य छोंड़ दिया,अपनी धन–दौलत का त्याग कर दिया। अपने मातृभूमि के हित में अपना रक्त का बलिदान कर दिया। तन, मन, धन सब त्याग करके अपनी मातृभूमि छत्तीसगढ़ का मान रख लिया।

साहित्य समाज के मनोभावों का दर्पण होता है। भारतीय काव्यशास्त्र में जितना महत्व श्रृंगार एवं वीर रस का है उससे करूण रस का महत्व कतई कम नही है, विश्व का प्रथम काव्य का सृजन भी करूण रस से हुआ है। छत्तीसगढ़ी साहित्य में करूण रस का गहरा प्रभाव देखा जाता है तब साहित्य करूण रस में प्रतिस्फुटित होता है। विशेषकर पारिवारिक संबंधों और सामाजिक परंपराओं के प्रसंग में छत्तीसगढ़ के साहित्यकार पं.श्यामलाल चतुर्वेदी की कविता बेटी के बिदा इसका मार्मिक उदाहरण है:

संसार के जतका दुख हे फेर बेटी बिदा ले छोटे दांवा दिल म लग जाथे जिवला कुछ चौबे खोटे बरम्हा के बेटी नइये का बिदा के दुख नई जानय बेटी जाय झन देतिस झन कहे कानो के मानय एक तो बेटी झन होतिस पर जातिस बिदा करे बर अंधरी भैरी कर देतिस।[5]

संसार के समस्त दुःखो को बेटी के बिदाई होने के दुःख के सामने नगण्य बताया गया है। कवि ब्रम्हा के सृष्टि पर ही प्रश्न उठाते हैं। अगर ब्रम्हा को बेटी की विदाई का दुख पता होता तो वे बेटी बनाते ही नही । यह भाव कविता के अत्यंत गहन करूणा से भर देता है। यह काव्य संवेदना की चरम अवस्था को दर्शाता है। छत्तीसगढ़ी लोकभाषा की सहजता और भावुकता कविता को और अधिक जीवन्त बनाती है। क्षेत्रीय बोली में करूण रस की अनुभुति और भी तीव्र हो जाती है।

मनुष्य जीवन में श्रृंगार, वीर, एवं करूण के साथ–साथ प्रफुल्लता व हास–परिहास का भी बहुत ही महत्व है। अन्य रसों की अपेक्षा हास्य सृजन करना कठिन है। छत्तीसगढ़ी साहित्य में हास्य रस को भी विशेष महत्व दिया गया है। हास्य रस के माध्यम से जनजीवन की सरलता, व्यवहारिकता और सामाजिक विडंबनाओं को सहज ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है। कपिलनाथ मिश्र की रचना दृष्टव्य है जिसमें हास्य और व्यंग्य के गहरे रंग विद्यमान हैः

दुल्हा हर तो दुल्ही पाईस, बाम्हन पाईस टक्का। सबै बराती बरा सोंहारी, समधी धक्कम धक्का। नाउ बजनिया दोउ झगरे, नेग चुका दा पक्का। पास मा एकौ कौड़ी नइये, समधी हक्का बक्का।[6]

कविता में हास्य रस की अभिव्यक्ति है। दुल्हा को दुल्हन मिल गई,बाम्हण दक्षिणा पाकर संतुष्ट हो गया बाराती खाना खाकर प्रसन्न हो गए पर अन्य व्यवस्थाओं में गड़बड़ी हो गई। शादी में नाई और बाजा वालों का आपस में नेग को लेकर झगड़ना एक आम ग्रामीण चित्रण है,जिसे कवि ने रोचक ढ़ंग से उकेरा है और अंत में एक भी कौड़ी न बचने पर समधी का हक्का बक्का हो जाना सामाजिक आर्थिक विडंबना को हास्य के माध्यम से उजागर करता है। इससे यह बात सामने आती है कि विवाह में लोग रस्मों में फंसकर कैसे फिजूलखर्च कर बैठते हैं। इस हास्य रस की कविता के माध्यम से कवि ने न केवल मनोरंजन किया है बल्कि सामाजिक व्यंग्य भी किया है।

हास्य रस के अलावा भारतीय साहित्य में रौद्र रस को भी स्थान दिया गया है। रौद्र रस क्रोध अन्याय के प्रतिकार और शौर्य का प्रतीक माना जाता है। छत्तीसगढ़ी साहित्य में भी रौद्र रस का प्रभाव ऐतिहासिक और सामाजिक आंदोलनो के चित्रण से स्पष्ट देखा जा सकता है। छत्तीसगढ़ राज्य जनजाति बाहुल्य राज्य है। यहां के आदिवासी समुदाय अपनी परंपरा एवं अपने अधिकारों के लिए हमेंशा ही आवाज उठाएं हैं। ऐसे ही कवि सुशील यदु की एक कविता की ओर हम अपनी दृष्टि रखेंगे जिसमें बस्तर के आदिवासी जनों का अंग्रेज शासन के खिलाफ किए गए विद्रोह को ओजस्वी ढ़ंग से चित्रित किया गया हैः

सन् उन्नीस सौ दस साल लड़िन बस्तर के आदिवासी मन विप्लव खातिर हथियार धरिन बस्तर के आदिवासी मन बस्तर के राजा रूद्रप्रताप सिंह देव रहिस वो समय उंहा भगवान बरोबर राजा ला मानै जुग जुग के रीत जिंहा अंगरेज बनाइस बैजनाथ ला बस्तर के मुखिया देवान देवान होईस सर्वेसर्वा, राजा के घटिस अधिकार मान विप्लव खातिर हथियार धरिन बस्तर के आदवासी मन।[7]

बस्तर विप्लव कविता छत्तीसगढ़ी साहित्य में रौद्र रस का अत्यंत सशक्त उदाहरण है जिसमें आदिवासी समाज नें अंग्रेजी शोषण और अन्याय के खिलाफ संगठित होकर विद्रोह किया। अन्याय सहने के बजाय आदिवासी समुदाय ने हथियार उठाने का मार्ग चुना जो रौद्र रस की चरम अवस्था को व्यक्त करता है। विद्रोह का स्वरूप केवल भावनात्मक नही बल्कि सशक्त संघर्ष का प्रतीक है जो कविता के रौद्र रस की पराकाष्ठा तक पहुंचाता है। यह रचना छत्तीसगढ़ी साहित्य में रौद्र रस की शक्ति और उसकी सामाजिक उपयोगिता को प्रमाणित करती है।

छत्तीसगढ़ के लोककाव्य परंपरा में आध्यात्मिकता, भक्ति और साधना को विशेष स्थान प्राप्त है। शांत रस भक्ति रस का प्रारंभिक अवस्था है जहां निर्वेद से शांति की ओर मनोदशा का आरोहण होता है। शांत रस अति कोलाहल और अस्थिरता के पश्चात मानवीयमन का क्षणिक दशा है। इसके कारण इसका स्थायी भाव निर्वेद है। छत्तीसगढ़ी काव्य के माध्यम से कवि केयूर भूषण ने अपने काव्य में शांत रस की अभिव्यक्ति से आमजनता को अध्यात्म की ओर जाने हेतु ध्यान आकर्षित किया है। छत्तीसगढ़ी साहित्य की शांत रस की कविता दृष्टव्य हैः

सतनाम ल मन म बईठा के डोंगरी म धुनी रमाथे, तप जोग के साधन करके अंतस म जोग जगाथे अंतस के जोत के प्रगट ले जग अंजोर हो जाथे, माया के उठ जाथे भरम अंधियारी छंट जाथे।[8]

यह कविता आध्यात्मिक यात्रा का वर्णन करते हुए शांति और आत्मज्ञान की स्थिति को दर्शाती है। कवि परमात्मा के नाम को ध्यान में रखकर वनांचल में साधना करता है। यह साधना तप और योग के माध्यम से होता है जिससे समस्त संसार आलोकित हो उठता है। माया का भ्रम नष्ट हो जाता है अज्ञानरूपी अंधकार छट जाता है। कविता में प्रयुक्त साधना, आत्मचिंतन, अंतःप्रकाश और माया का क्षय ये सभी शांत रस के अंग है। कविता मनुष्य को सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर आत्मिक शांति की ओर प्रेरित करती है। यह कविता छत्तीसगढ़ की लोकधारणा में रचे–बसे उस आध्यात्मिक दर्शन को प्रस्तुत करती है जो आत्मिक शांति और निर्वेद को महत्व देती है।

निष्कर्ष

रसों को काव्य का प्राणतत्व कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। काव्यसृजेता रस को लक्ष्य कर के सृजन कार्य नही करता अपितु उनके सृजन में रसों का यथासमय अनायास आगमन हो जाता है, और काव्य को मानवीय सौंदर्य से भर देता है। छत्तीसगढ़ी काव्य में रसाभिव्यक्ति कविता के भीतर छिपे अर्थ को स्पष्ट करती है जिससे भावनात्मक गहराई को समझने में मदद मिलती है। रसों के माध्यम से लोकजीवन, परंपरा और संस्कृति की सजीव झलक स्पष्ट दिखाई देती है। रस के आधार पर हम कविता की सौंदर्यात्मकता और प्रभावशीलता का मूल्यांकन कर सकते हैं। रस पाठक और कवि के बीच संवेदनात्मक सेतु का कार्य करता है। साहित्यक आलोचना और अध्ययन के लिए रस एक आधारभूत उपकरण है जिससे काव्य की गुणवत्ता आंकी जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. पाण्डेय,सरस्वती गोविन्द (2017) *हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास.* अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 405।
2. तिवारी, रामचन्द्र (2021) *भारतीय व पाश्चात्य काव्यशास्त्र तथा हिन्दी आलोचना.* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 26–27।
3. तिवारी, नन्दकिशोर (2018) *छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा.* वैभव प्रकाशन, रायपुर, द्वितीय संस्करण, पृ. 35।
4. चंद्राकर, रमणी (2015) *केयूर भूषण के छत्तीसगढ़ी साहित्य का अनुशीलन.* वैभव प्रकाशन, रायपुर, प्रथम संस्करण, पृ. 237।
5. तिवारी, नन्दकिशोर (2018) *छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा.* वैभव प्रकाशन, रायपुर, द्वितीय संस्करण, पृ. 29–30।
6. बलदेव (2011) *छत्तीसगढ़ी कविता के सौ साल.* वैभव प्रकाशन, रायपुर, प्रथम संस्करण, पृ. 64।
7. यदु, सुशील (2001) *छत्तीसगढ़ के सुराजी बीर.* छत्तीसगढ़ी साहित्य समिति, रायपुर, द्वितीय संस्करण, पृ. 20।
8. भूषण, केयूर (2002) *मोर मयारूक गांव.* जनचेतना प्रकाशन, रायपुर, प्रथम संस्करण, पृ. 60।

****